No. of Printed Pages : 12 **MTT–002**

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BANGLA-HINDI TRANSLATION (PGCBHT)

Term-End Examination

June, 2025

MTT-002 : बांग्ला-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए : 2×10=20

(क) बांग्ला और हिंदी के बीच क्या भाषिक तथा सामाजिक भिन्नताएँ हैं ? उदाहरण सहित बताइए।

(ख) बांग्ला और हिंदी में शब्दों के स्तर पर क्या समानताएँ हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) बांग्ला से हिंदी में लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए ? उदाहरण सहित समझाइए।

(घ) बांग्ला की बोलचाल की कथन–शैली का हिंदी के अनुरूप अनुवाद करने में क्या परेशानियाँ पैदा होती हैं ? दोनों की कथन भंगिमाओं के बारे में उदाहरण सहित बताइए।

2. निम्नलिखित बांग्ला पदों/शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

(i) ধুলো

(ii) অবহেলিত

(iii) বন্ধু

(iv) বিপন্ন

(v) গবেষণা

(vi) ভাঙা

(vii) সহমর্মী

(viii) অমোঘ

(ix) ক্ষতি

(x) অবলম্বন

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों में बांग्ला पर्याय लिखिए : 5

(i) बर्तन

(ii) दैनिक

(iii) बाहर

(iv) एक साथ

(v) बचपन

(vi) दक्षता

(vii) शायद

(viii) पहले

(ix) अतिरिक्त

(x) समीप

4. निम्नलिखित हिंदी मुहावरों–लोकोक्तियों में से किन्हीं **पाँच** के बांग्ला समतुल्य बताते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए : 15

(i) दीवारों के भी कान होते हैं।

(ii) घमंडी का सिर नीचा।

(iii) बहती गंगा में हाथ धोना।

(iv) उम्मीदों पर पानी फिरना।

(v) सिर मुड़ाँते ओले पड़ना।

(vi) चादर देखकर पाँव फैलाना।

(vii) दुधारू गाय की लात भी भली।

(viii) कोयले की दलाली में हाथ काला।

(ix) चोर की दाढ़ी में तिनका।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 3×15=45

(ক) ঝপ করে বেতের চেয়ারটার ওপর বসে পা দুটো ছড়িয়ে একটা বড় নিশ্বাস ফেললেন রজত। অনেকক্ষন টানা গাড়ি চালিয়ে এসেছেন সেই ক্লান্তি। গলার টাইয়ের ফাঁস আলগা করতে করতে বললেন, জানো, আজ হঠাৎ অরুণের সঙ্গে দেখা হল।

পাশের ছোট্ট ঘরটার দরজার পাশে বসে মালতী লুচি ভাজছিল। স্টোভের হিস হিস শব্দে সামান্য অন্ধকারে মালতীর মুখে লাল আভা। গাঢ় নীল রঙের শাড়ি পরেছে বলে সেই অন্ধকারে মালতীর ফরসা মুখ আর স্টোভের লালচে শিখায় সব মিলিয়ে খুব মানিয়েছে। মুখ না তুলেই মালতী বলল কে অরুণ? অরুণ দাশগুপ্ত? ছুটি শেষ হয়ে গেল এর মধ্যে !

সে নয়। তোমার বন্ধু অরুণ।

আমার আবার কে বন্ধু?

বিয়ের আগে তুমি যাকে চিনতে !

চাকি থেকে গোল লেচি তুলে অ্যালুমিনিয়ামের কড়াইতে গরম ঘিয়ের মধ্যে ছাড়ার সময় ছ্যাঁক করে একটা শব্দ হল। সেই শব্দের সঙ্গে মিলিয়ে সামান্য হেসে মালতী বলল বিয়ের আগে তো আমি তিনজন অরুণকে চিনতুম ! এ কোন জন?

টাই খোলা হয়ে গেছে। রজত এখন জুতোর ফিতে খুলছেন। সেই অবস্থায় মুখ নিচু রেখেই বললেন, বাঃ ! অরুণ চ্যাটার্জিকে তোমার মনে নেই?

মালতী বলল, তুমি আগে জলখাবার খাবে, না আগে স্নান সেরে নেবে?

(খ) সম্পর্ক মিলাইয়া দেখিতে গেলে বনমালী এবং হিমাংশুমালী উভয়ে মামাতো পিসতুতো ভাই; সেও অনেক হিসাব করিয়া দেখিলে তবে মেলে। কিন্তু ইহাদের দুই পরিবার বহুকাল হইতে প্রতিবেশী, মাঝে কেবল একটা বাগানের ব্যবধান, এইজন্য ইহাদের সম্পর্ক নিতান্ত নিকট না হইলেও ঘনিষ্ঠতার অভাব নাই।

বনমালী হিমাংশুর চেয়ে অনেক বড়ো। হিমাংশুর যখন দন্ত এবং বাক্য-স্ফূর্তি হয় নাই তখন বনমালী তাহাকে কোলে করিয়া এই বাগানে সকালে সন্ধ্যায় হাওয়া খাওয়াইয়াছে, খেলা করিয়াছে, কান্না থামাইয়াছে, ঘুম পাড়াইয়াছে; এবং শিশুর মনোরঞ্জন করিবার জন্য পরিণতবুদ্ধি বয়স্ক

লোকদিগকে সবেগে শিরশ্চালন, তারস্বরে প্রলাপভাষণ প্রভৃতি যে-সকল বয়সানুচিত চাপল্য এবং উৎকট উদ্যম প্রকাশ করিতে হয়, বনমালী তাহাও করিতে ত্রুটি করে নাই।

বনমালী লেখাপড়া বড়ো-একটা কিছু করে নাই। তাহার বাগানের শখ ছিল এবং এই দূরসম্পর্কের ছোটোভাইটি ছিল। ইহাকে খুব একটি দুর্লভ দুর্মূল্য লতার মতো বনমালী হৃদয়ের সমস্ত স্নেহসিঞ্চন করিয়া পালন করিতেছিল এবং সে যখন তাহার সমস্ত অন্তর-বাহিরকে আচ্ছন্ন করিয়া লতাইয়া উঠিতে লাগিল তখন বনমালী আপনাকে ধন্য জ্ঞান করিল।

(গ) পাষাণে ঘটনা যদি অঙ্কিত হইত তবে কতদিনকার কত কথা সোপানে সোপানে পাঠ করিতে পারিতে। পুরাতন কথা যদি শুনিতে চাও তবে আমার এই ধাপে বইস; মনোযোগ দিয়া জলকল্লোলে কান পাতিয়া থাকো, বহুদিনকার কত বিস্মৃত কথা শুনিতে পাইবে।

আমার আর-এক দিনের কথা মনে পড়িতেছে। সেও ঠিক এইরূপ দিন। আশ্বিন মাস পড়িতে আর দুই-চারি দিন বাকি আছে। ভোরের বেলায় অতি ঈষৎ মধুর নবীন শীতের বাতাস নিদ্রোখিতের দেহে নূতন প্রাণ আনিয়া দিতেছে। তরুপল্লব অমনি একটু একটু শিহরিয়া উঠিতেছে।

ভরা গঙ্গা। আমার চারিটিমাত্র ধাপ জলের উপরে জাগিয়া আছে। জলের সঙ্গে স্থলের সঙ্গে যেন গলাগলি। তীরে আম্রকাননের নীচে যেখানে কচুবন জন্মিয়াছে সেখান পর্যন্ত গঙ্গার জল গিয়াছে। নদীর ঐ বাঁকের কাছে তিনটে পুরাতন ইঁটের পাঁজা চারি দিকে জলের মধ্যে জাগিয়া রহিয়াছে। জেলেদের যে নৌকাগুলি ডাঙার বাবলাগাছের গুঁড়ির সঙ্গে বাঁধা ছিল সেগুলি প্রভাতে জোয়ারের জলে ভাসিয়া উঠিয়া টলমল করিতেছে-দুরন্ত যৌবন জোয়ারের জল রঙ্গ করিয়া তাহাদের দুই পাশে ছল ছল আঘাত করিতেছে, তাহাদের কর্ণ ধরিয়া মধুর পরিহাসে নাড়া দিয়া যাইতেছে।

(ঘ) দীর্ঘশ্বাস ফেলেছিলাম আমি। খুব ইচ্ছে করছিল জিজ্ঞেস করতে, ওই কাজটাও কি আমাকে করতে হবে ! কিন্তু মুখে সেটা বলিনি

"তুমি রেডি থাইকো।..রাইতে আইতাছি ", বলেই চলে গেলো গেসু।

কথামতোই সে ফিরে এলো রাত ন'টার দিকে। তার লাল চোখদুটো দেখে বুঝতে পারলাম, গাঁজা মদ খেয়ে এসেছে, সঙ্গে করে নিয়ে এসেছে ভুনা মাংস আর পরোটা। আমি, গেসু আর তার সেই বন্ধু একসঙ্গে বসে খেলাম, তারপর রাইফেলের ব্যাগটা নিয়ে রওনা দিলাম জিঞ্জিরার দিকে।

রাত প্রায় এগারোটার দিকে নদীর তীরঘেঁষা একটি চারতলা ভবনের ছাদে উঠলাম আমরা। পুরো ভবনটাই গার্মেন্টস ফ্যাক্টরির কাজে ব্যবহার করা হয়। গেসু কীভাবে কী ম্যানেজ করেছে জানি না, ভবনের দারোয়ান চাবি দিয়ে দরজা খুলে ছাদে ওঠার ব্যবস্থা করে দিয়েছিল আমাদেরকে।

নদীর উপরে থাকা বেশ কিছু লঞ্চের মধ্য থেকে এমভি জামান নামের একটি লঞ্চ দেখিয়ে দিলো গেসু, ওটার এক কেবিনেই আছে সজল। ক্যাবিনের সামনের অংশটা রেলিং দিয়ে ঘেরা। বাতি জ্বলছে সেখানে, কিন্তু জনমানুষের কোনো চিহ্ন নেই।

গেসু জানালো, মোকাররম নামে সজলের এক ঘনিষ্ঠ বন্ধু আছে, এই লঞ্চটা তার বাপের। ইঞ্জিন মেরামতের জন্য নদীতে নোঙর করে রাখা হয়েছে। সজলের এমন আত্মগোপন একটিই বার্তা দিলো আমাদেরকে : বড়সড় আঘাত হানতে যাচ্ছে সে, আর সেটা অবশ্যই আমাদের উপরে !

(ঙ) আরও কিছুদিন কখনও বোনে-জঙ্গলে, কখনও লোকালয়ে ঘোড়াঘুরির পর মধ্যপ্রদেশের একটা ছোটো সহরে তাহারা বাসা বাঁধিল।কলিকাতার খন্ড যুদ্ধে বিমল, পন্ডিত মহাশয় প্রভৃতি সকলেই,

কেহ পুলিশের গুলিতে, কেহ বা আত্মহত্যা করিয়া মানুষের বিচারের হাত হইতে অব্যাহতি পায়। কেবল একজনকে গুরুতর আহত অবস্থায় পুলিশে গ্রেপ্তার করে এবং তাহারই বিকারের টুকরা-টুকরা উক্তি হইতে প্রথমে পাঁচজনকে, তারপর আরও বিশজনকে গ্রেপ্তার করে।

এই পঁচিশ জনেরই বিচার চলিতেছিল। এবং প্রতিদিন সংবাদপত্রে সরকারী সাক্ষীর মুখে এমন-এমন রহস্য প্রকাশিত হইতেছিল যাহা বিপ্লবীদলের কেহ কখনো কল্পনাও করে নাই।

এমনি অবস্থায় সমীরণ ও মক্ষি বাসা বাঁধিল মধ্যপ্রদেশের একটা ছোট সহরে। বাজারের মধ্যে খাপরার একখানি ছোট বাড়ী। বাহিরের ঘরে একখানি কাপড়ের দোকান, সেখানে থাকে সমীরণ, আর ভিতরে রান্নাঘরে থাকে মক্ষি, রাঁধে, বাড়ে, খায়।

তাম্রকূট সেবনের লোভে পুলিশগুলি মাঝে-মাঝে আসে। সমীরণ পরম সমাদরে বাহিরে গোটা কয়েক টুল পাতিয়া তাহাদের বসায়, তামাকু সেবন করায় এবং নানাবিধ সুখ-দুঃখের গল্প করে।

মাঝে মাঝে সন্ধ্যার পরে বড় দারোগাবাবুও আসেন। মারাঠার দেশে বহু মারাঠার ভিড়ের ভিতর দিয়া এই বাঙ্গালীটি কেমন করিয়া এত বড় পদ পাইলেন এই প্রায় নিরক্ষর, নবাগত বাঙ্গালীটিকে তাহা প্রায়ই বুঝাইয়া দেন।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 10

(क) परशुराम ने मर्यादा से कड़ी आवाज में कहा, "दहलीज पर ही रुक जाओ।"

मर्यादा ने पूछा, "ऐसा क्या हो गया कि मुझे दहलीज पर रुकने के लिए कह रहे हो ?"

"तुम्हें घर के अंदर आने से पहले यह बताना होगा कि इतने दिनों से कहाँ और किसके साथ थी। अब यहाँ कैसे और किसके साथ आई हो ?" परशुराम ने पूछा।

परशुराम कहने लगे, "नहीं, तुम्हें अभी जवाब देना होगा। हम दोनों साथ में ही नदी से बाहर निकले थे। तुम मेरे पीछे चल रही थी, लेकिन अचानक कहाँ चली गई थी ?"

दुखी आवाज में मर्यादा बोलने लगी, "आपने देखा नहीं था कि वहाँ अचानक नागा पंथ के साधुओं का हुजूम आ गया था। सारे लोग इधर-उधर दौड़ रहे थे। तभी मुझे धक्का लगा और मैं न जाने किस दिशा में चली गई। जैसे ही थोड़ी भीड़ कम होने लगी, मैंने आपको खूब पुकारा।"

"अच्छा तब क्या हुआ", परशुराम ने पूछा।

आप कहीं भी नहीं दिखे, तो मैं रोने लग गई। संध्या तक वहीं बैठी। फिर एक लड़के ने आकर मुझसे पूछा कि तुम खो गई हो ? मैंने जैसे ही हाँ कहा, तो उसने मुझसे घर का पता और पति का नाम पूछकर एक डायरी में लिख लिया। फिर मुझे कहा कि तुम्हें घर तक हम पहुँचा देंगे। बस तुम अभी मेरे साथ चलो। मेरे पास कोई रास्ता भी नहीं था, तो मैं उसके साथ चल दी।

(ख) सालों पहले गुमथा गाँव में रहने वाला एक किसान काफी दुखी था। वह अपनी जीवन की छोटी-छोटी परेशानियों को लेकर उदास रहता था और अपने दु:ख के बारे में लोगों को बताता फिरता था। एक दिन उसे किसी ने सलाह दी कि तुम गौतम बुद्ध के पास चले जाओ, वे तुम्हारी समस्याओं का कोई-न-कोई हल

जरूर निकाल देंगे। उस व्यक्ति की बात सुनते ही दूसरे दिन वह किसान सीधे महात्मा बुद्ध के पास पहुँच गया।

बुद्ध के पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम करते हुए उसने बताया कि मैं एक किसान हूँ और मैं खेती करके जीवनयापन करता हूँ। मैं यहाँ अपनी समस्याओं का समाधान लेने के लिए आया हूँ। दरअसल, कई बार हमारी फसल अच्छी होती है, तो कभी बिल्कुल भी नहीं होती। इससे मैं बहुत परेशान हो जाता हूँ।

इतना कहने के बाद किसान ने आगे कहा कि मेरी पत्नी है और वह मुझसे बेहद प्रेम करती है, पर कभी-कभी वह मुझे बहुत परेशान करती है। उससे मैं तंग आ गया हूँ और कभी-कभी लगता है कि अगर वह मेरे जीवन में नहीं आती, तो मैं कितने अच्छे से रहता। इस तरह वह अपनी सारी परेशानियाँ महात्मा बुद्ध को सुनाता रहा और वे उसकी बातें सुनते रहे। जब तक किसान बात कर रहा था, तब तक गौतम बुद्ध एक शब्द भी नहीं बोले। वे बस ध्यान से किसान की ही बातें सुन रहे थे।

परेशानी बताते हुए किसान बोलता है कि मेरा एक बच्चा भी है। वो है तो काफी अच्छा, पर कई बार मुझे परेशान करता है और मेरा कहना नहीं मानता।

× × × × ×